International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 67-69

मध्य काल में नारियों की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थितिः एक विश्लेषण

डॉ0 रजनीश राय
समाजकार्य एवं मानव विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

नारी ममतामयी माँ के रूप में जितनी पूज्य है। सौन्दर्य की अधिष्ठात्री के रूप में काम प्रधान पुरूष की उच्छृंखल वासना दृष्टि का शिकार भी नारी ही बनती है और मध्य काल की नारी भी इसका अपवाद नहीं थी। रानी पद्मिनी की सौन्दर्य प्रशंसा को सुनकर अलाउद्दीन खिलजी के कुत्सित वासना दृष्टि तथा पद्मिनी को प्राप्ति के लिए युद्ध का निरा काम का अनावश्यक विस्तार है। नैसर्गिक रूप से पूरा भारतीय समाज नारी की शीले रखने के लिए मुस्लिम आक्रांताओं की जीवन शैली के सदृश्य पर्दा–प्रथा को ही अपने प्रयोग और प्रचलन में समाहित कर लिया था। उसी प्रकार सम्पूर्ण भारतीय समाज नारी की सामाजिक एवं राजनीतिक भूमिका का विरोधी न होते हुए भी तत्कालीन परिवेश से प्रताड़ित होकर नारी की सामाजिक व राजनीतिक भूमिका को अभिमुखी बनाने से सदैव घबराता रहा। यह उसकी आवश्यकता नहीं प्रत्युत विवशता थी। यह हृदय का भाव नहीं मन का तर्क था। वस्तुतः मुस्लिम काल में नारी के जीवन को पूर्णतः तिमिराच्छादित कर दिया था। मुहम्मद बिन कासिम से लेकर मुगल साम्राज्य के पतन तक का इतिहास भारतीय नारी की सामाजिक अवस्था, स्थित घर की चहार दीवारी व पर्दा प्रथा में रहने के कारण समाज से भारतीय नारी का बिलगाव होता गया परिणामतः मध्य युग की नारी शिक्षा से भी वंचित होती रही।

सृष्टि के प्रारम्भ से ही स्त्री एवं पुरूष की उपस्थिति अन्योन्याश्रित रही है। सम्पूर्ण सृष्टि ही नर–नारी मय है अतः नारी का अस्तित्व सृष्टि की जीवन्तता का पर्याय है। नारी सभयता के सृजन की शिल्पी है। नारी संस्कार की प्रथम पाठशाला है। नारी सृष्टि की निरंतरता की प्रतीक है। नारी आधी आबादी है। आधी आबादी की सामाजिक राजनीतिक एवं वैचारिक गवेषणा के बिना समाज विज्ञान का अध्ययन एवं अनुशीलन अधूरा प्रतीत होता है। अस्सी एवं नब्बे के दशक भारत में सामाजिक राजनीतिक विकास के परिवर्तन का निर्णायक समय है। इस समय आधी आबादी में किस प्रकार की नारी चेतना थी तथा उसमें किस प्रकार क्रमिक परिवर्तन हो रहा था इस पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है।

यदि हम सामाजिक परिवेश पर ध्यान दें तो दृष्टिगोचर होता है कि भारतीय जीवन प्रणाली की अर्थिकता का आधार नारी ही रही है। समाज में नारी अपने अनेक रूपों के साथ उपस्थित रही है। जननी, जाया, भगिनी व संगिनी बनकर वह पुरूषों को परिवार एवं समाज से आबद्ध करती रही है। अतः नारी सेतु है। नारी के गुण ममता, लज्जा एवं सहिष्णुता माने गये हैं एवं पुरूष के गुण शौर्य, कठोरता एवं निर्ममता आदि माने गये हैं। नर में बुद्धि पक्ष की प्रधानता होती है तो नारी में भाव–पक्ष की प्रधानता रही है। नारी की इसी गरिमा व महत्ता के कारण हिन्दू धर्म कथाओं में अर्द्धनारीश्वर की कल्पना की गयी है। प्राचीन वाङ्गमय में भारतीय नीति–संहिता के विधायक महर्षि मनु ने नारी की महत्ता को घोषित करते हुए कहा या कि–यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता

सम्पूर्ण मध्यकाल नारी की आत्मपीड़ा की महागाथा है। इस काल में नारी की सामाजिक राजनीतिक उपस्थित मात्र अभिजात्य वर्ग तक सीमित थी गुलबदन बेगम, मेहरूनिशां, मुमताज महल, नूरजहॉ,रजिया सुल्तान, महामनगा सदृश नारियां कुलीन परिवारों से आती थी तथा तत्कालीन, मध्यकालीन, राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था में साकारात्मक हस्तक्षेप करती थीं, जिनका परामर्श एवं निर्देश तत्कालीन प्रशासनिक व्यवस्था पर बाध्यकारी शक्ति के रूप में अरोपित होता था। फलतः मध्यकाल की सामाकि एवं राजनीतिक जागरूकता सीमित अवश्य थी परन्तु जागरण की दृष्टि से अपनी उपस्थिति का भान कराती थी।

भारत में गुलाम वंश की स्थापना के उपरान्त केवल ऐतिहासिक अपवाद है। गुलाम वंश के शासन काल में नारी की सामाजिक व राजनीतिक भूमिका मृतप्राय थी। रजिया न केवल एक सुशिक्षित नारी थी अपितु कुशल शासनकर्ता भी थी। इल्तुतमिश ने उसकी योग्यता एवं कुशलता के कारण पुत्रों के सामने उसे अपना उत्तराधिकारी बनाया था। रजिया ने अत्यधिक योग्यता एवं दूरदर्शिता से शासन संचालन किया तथा अधिक कूटनितिज्ञता का प्रदर्शन करते हुए अपने विरोधियों का दमन किया था। पर्दे का परित्याग कर रजिया खुले दरबार में बैठती थी रजिया प्रशासन के प्रत्येक कार्यों का स्वयं निरीक्षण करती थी वह प्रजा के दुःख एवं सुख का पूरा–पूरा ध्यान रखती थी।

लोदी साम्राज्य में भी रानियों की सामाजिक एवं राजनीतिक भूमिका महत्वपूर्ण थी। राजकुमार हुसैन को सिंहासनारूढ़ करने में उसकी माँ की भूमिका महत्वपूर्ण थी। लेकिन मध्य काल में ऐसी नारी स्वरूप अपवाद ही है। मध्यकालीन भारत का नारी समाज प्रायः कुण्ठित ही रहा है। यह वही दौर था जब मुस्लिम नारी की स्थिति अत्यन्त सोचनीय हो गयी थी। नारी स्वतंत्रता का पूर्णरूपेण अपहरण हो गया था। पर्दा प्रथा की जटिलता ने भारतीय नारी को विसंगतियों से पूर्ण बना दिया। श्वसुर अपनी पुत्र वधू को आसानी से नहीं पहचान पाता था उसे उसका मुख देखने का प्रायः अवसर नहीं मिलता था। प्रारम्भ में मुस्लिम बनायी गयी स्त्रियों को हिन्दू स्वीकार कर लेता था परन्तु बाद में प्रायश्चित करने के उपरान्त भी प्रायः उन्हें हिन्दू धर्म में स्वीकार नहीं किया जाता था।

मुसलमानों की हवस, बहुपत्नी प्रथा, बहुविवाह की प्रवृति भोग विलास की भावना ने जहॉ नारियों का जीवन स्तर हेय बनाया वहीं दरबार की विलासिता ने वेश्यावृत्ति को प्रोत्साहित किया। अकबर ने वेश्याओं के लिए शैतानपुरी नामक बस्ती का निर्माण कराया था। भोग विलास व वेश्यावृत्ति की प्रवृत्ति के फलस्वरूप हिन्दू राजा की पत्नियों ने जौहर व्रत को अंगीकार किया था। राजपूतों में जौहर की प्रथा अत्यधिक प्रचलित थी। राजा बुद्ध सिंह की चिता में 84 रानियों ने आत्मदाह किया था। मारवाड़ के राजा अजीत सिंह की मृत्यु के बाद उनकी 84 रानियाँ सती हुई थीं। युद्ध में असफलता

निश्चित होने पर राजपूत अपने परिवार की स्त्रियों को एक कोठरी में बन्द करके उसमें अग्नि प्रज्जवलित कराकर उन्हे भस्म करवा देते थे। चंदेरी राज्य के राजा मेदिनी ने राज्य के सभी सैनिकों एवं उनके परिवार की नारियों एवं बच्चों की इस प्रकार हत्या करा दी थी।[99] मुगलकाल अपेक्षाकृत अपने पूर्ववर्ती काल के नारी की सामाजिक व राजनीतिक भूमिका के सन्दर्भ में सकारात्मक है। अकबर ने नारी शिक्षा पर भी ध्यानाकर्षण किया था। नारी शिक्षा का पक्ष पोषक होने के कारण अकबर ने नारियों के लिए पृथक मदरसे निर्मित किये। मुगल घराने में अनेक विदुषी महिलाओं की विद्यमानता थी। बाबर की पुत्री गुलबदन बेगम एक योग्य साहित्यकार थी। उनकी रचना हुमायूँनामा ऐतिहासिक एवं साहित्यक विधि से एक महान कृति है। जफर अशरफ के अनुसार मुस्लिम बालिकायें, बालकों के साथ ही शिक्षा ग्रहण करती थी। नूरजहाँ, मुमताज महल, जहाँआरा तथा औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निशा। मुगल स्त्रियाँ विदुषी होने के साथ–साथ प्रशासन कार्य में भी दक्ष थी। हुमायूँ अपने परिवार की स्त्रियों से मिलने के लिए तीन दिन का समय अवश्य निकालता था तथा उनके परमर्श को मानता था। इस प्रकार जहाँगीर के शासन काल में नूरजहाँ का अत्यधिक अधिपत्य था शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा शाहजहाँ के राजनीतिक कार्यो में सलाह देती थी। मुगलकाल अपेक्षाकृत अपने पूर्ववर्ती काल के नारी की सामाजिक व राजनीतिक भूमिका के सन्दर्भ में सकारात्मक है। शाहजहाँ के शासनकाल में साहिबा नाम की महिला अफगानिस्तान की गवर्नर थी।

इस प्रकार मुगल काल में नारियों की सामाजिक व राजनीतिक स्थित अन्य शासनों की अपेक्षा बेहतर थी। नारी की शिक्षा राजदरबार तक ही सीमित थी। सामान्य नारी की सामाजिक व राजनीतिक स्थिति शून्य थी।

मुगल काल के समानान्तर हिन्दू राजाओं तथा हिन्दू जनता ने नारी की सामाजिक, राजनीतिक, शिक्षा क्रमशः तीनों उच्च वर्ग तक ही सीमित थी। शिक्षा केवल राजपूत एवं ब्राह्मण नारियों को ही दी जाती थी। नर्तकी एवं वेश्याओं की शिक्षा एवं ललित कला एवं अन्य विलास की कला में प्रवीण होने के कारण नारियों में शिक्षा को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता था। मराठों में कन्याओं को अस्त्र–शस्त्र की शिक्षा भी दी जाती थी। इस क्रम में अहिल्याबाई एवं ताराबाई का नाम महत्वपूर्ण है। चंदेल सरदार की पुत्री एवं गोंडवाना की रानी दुर्गावती का नाम अपनी देश भक्ति के लिए प्रख्यात है। 1666 ई0 में शिवाजी के आगरा जाने के पश्चात् उनकी माता जीजाबाई ने छोटे से राज्य पूना का कुशलता से शासन किया। शिवाजी की पुत्र बधू अपने पति राजाराम से अधिक साहसी व सुदक्ष थी।

इन्दौर की रानी अहिल्याबाई (1735–1765) मराठा इतिहास में ताराबाई के सदृश ही महत्व रखती हैं। मल्हार राव की पुत्र वधू अहिल्याबाई योग्य व चतुर स्त्री थी। मल्हार राव ने अनेक प्रशासनिक कृत्य अहिल्याबाई को उनकी प्रशासनिक क्षमता को देखते हुऐ हस्तगत कर दिया था।

निष्कर्षत

कहा जा सकता है कि मुगल काल के समानान्तर हिन्दू राज काल में नारी की स्थिति सामाजिक एवं राजनीतिक परिक्षेत्र में अभिजात्य वर्ग तक सीमित थी। अभिजात्य वर्ग की स्त्रियाँ अथवा राजकुल की स्त्रियाँ अपनी सामाजिक तथा राजनीतिक भूमिकाओं का निर्वहन करती थी। वृहत्तर समाज की अन्य नारियाँ सामाजिक एवं राजनीतिक सोपान की परिधि से बाहर खड़ी थी। उनका सामाजिक व राजनीतिक अस्तित्व अपने संवेदना व चेतना के स्तर पर जन संघर्ष करने के लिए भी सामर्थ्य नहीं रखता था।

यदि ऋग्वेद काल, पुराण काल, स्मृतिकाल व मध्य काल का ऐतिहासिक विश्लेषण नारी की सामाजिक व राजनीतिक भूमिका के सन्दर्भ में विवेचित करें तो आरोही क्रम में निरन्तर ह्रास की निरन्तरता दृष्टिगोचर होती है। जिसकी तार्किक परिणति भारतीय नारी की दैन्य एवं दारूण अवस्था में होती हैं जिसे डॉ0 राम मनोहर लोहिया जैसा मनीषी चिंतक व विचारक दुनिया की सर्वाधिक दुखी जाति के रूप में संगणना करता है। जो कभी आधे पेट खाकर, तो कभी भूखी सो जाती है।

सन्दर्भ

1. इवोल्यूशन आफ मदर वरशिप इन इण्डिया शशि भूषण दास गुप्ता (ग्रेट विमेन ऑफ इण्डिया में संग्रहीत 1953 कलकत्ता) पृष्ठ संख्या 49–50।
2. हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता–बेनी प्रसाद (पृष्ठ संख्या–50)।
3. बीमेन ऑफ इण्डिया : राधमुकुन्द मुखर्जी पृष्ठ संख्या 1।
4. पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइशेन–ए0एस0 अल्टेकर (पृष्ठ संख्या–410–411)
5. पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइशेन (ए0एस0 अल्टेकर) (पृष्ठ संख्या–31)
6. ऋग्वेद श्लोक 1/115/2।
7. वीमेन इन ऋग्वेद : भगवत शरण उपाध्याय पृष्ठ संख्या–92।
8. वीमेन इन वैदिक राज : शकुन्तला राव शास्त्री पृष्ठ 6।
9. ऋग्वेद 1/177/2।
10. सेशल लाइफ इन एन्शियन्ट इण्डिया, कल्चरल हेरिटेज ऑफ इण्डिया : हीरा चन्द चकलादार भाग 3 पृष्ठ 197।
11. पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन : ए0एस0 अल्टेकर पृष्ठ 12।
12. ऋग्वेद 1/671/3।
13. ऋग्वेद 1/85/26।
14. ऋग्वेद 10/85/86।
15. वीमेन इन ऋग्वेद भगवातशरण उपाध्याय (पृष्ठ संख्या–3) 1941 बनारस।
16. हिन्दू सीविलाइजेशन–राधाकुमुन्द मुखर्जी–1985 बम्बई पृष्ठ 40।
17. पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन : ए0एस0 अल्टेकर (पृष्ठ–239–234)।
18. ऋग्वेद 1/111, 101, 118/10/8, 102, 2/10, 102/2/19।
19. ऋग्वेद 84319।
20. ऋग्वेद 1, 40, 9–1, 162, 16–10, 5, 421, 1, 166,10–5, 6–10।
21. ऋग्वेद 1, 140, 9–10, 114, 3–2, 36।
22. वीमेन इन एन्शिएन्ट इण्डिया, सी0 वेन्डर लन्दन 1925 पृष्ठ 63।
23. हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता : बेनी प्रसाद प्रयाग 1931 पृष्ठ संख्या 166।
24. ऐतरेय ब्राह्मण। 1–7।
25. तैत्तरीय उपनिषद 6, 5, 8, 2।
26. शतपथ ब्राह्मण 1, 3,1, 9।
27. हिन्दूस्तान की पुरानी सभ्यता : बेनी प्रसाद पृष्ठ संख्या–103 एवं पोजीशन ऑफ वीमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, ए0एस0 अल्टेकर, पृष्ठ संख्या–411।
28. हिन्दू सिविलाइजेशन राधा मुकुन्द मुखर्जी पृष्ठ 141 एवं

पोजीशन ऑफ वूमेन इन इण्डिया हिन्दू सिविलाइजेशन ए0एस0 अल्टेकर पृष्ठ संख्या–14।
29. दि कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया : ए0वी कीथ प्रथम भाग पृष्ठ संख्या–247।
30. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास : काशी नागिरी प्रचारिणी सभा प्रथम भाग, पृष्ठ 202–203।